

✦ राष्ट्रहित, स्वास्थ्य एवं स्वावलंबन संस्करण ✦

राजीव दीक्षित

जीवन गाथा, वैचारिक क्रांति और संपूर्ण स्वदेशी दर्शन

"जब तक इस देश का किसान, गांव और आम नागरिक आत्मनिर्भर नहीं होगा, तब तक भारत की सच्ची स्वतंत्रता अधूरी है।"

लेखक एवं शोध संकलनकर्ता: **धवल हिरपरा**

२०२६ संस्करण

प्रामाणिक अध्ययन

कुल पृष्ठ: १५

विस्तृत शोध ग्रंथ

निःशुल्क जनहित

जन-जागरण हेतु

पूर्ण स्वदेशी

व्यवस्था परिवर्तन

परिचय

लेखक परिचय एवं पारदर्शिता

लेखक के विषय में (About the Author)

धवल हिरपरा एक प्रखर लेखक, शोधार्थी एवं तकनीकी विशेषज्ञ हैं, जो भारतीय संस्कृति, ग्रामीण स्वावलंबन और स्वदेशी दर्शन के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए निरंतर सक्रिय हैं। पारंपरिक भारतीय ज्ञान और आधुनिक चेतना के समन्वय में दृढ़ विश्वास रखने वाले धवल हिरपरा विगत कई वर्षों से जन-उपयोगी विषयों, कृषि-चिंतन और ऐतिहासिक शोध पर स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

लेखक का मानना है कि भाई राजीव दीक्षित जी के विचार केवल अतीत के व्याख्यान नहीं हैं, बल्कि इक्कीसवीं सदी के आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का व्यावहारिक मार्गदर्शक हैं। इस ग्रंथ का संकलन किसी व्यावसायिक लाभ के उद्देश्य से नहीं, बल्कि युवा पीढ़ी को भारत के वास्तविक इतिहास, स्वास्थ्य-स्वावलंबन और आर्थिक स्वाधीनता के प्रति जागरूक करने के पुनीत संकल्प के साथ किया गया है।

सूचना एवं शोध के स्रोत (Sources of Information)

इस पुस्तक में प्रस्तुत सभी तथ्य, आंकड़े और विचार निम्नलिखित प्रामाणिक स्रोतों के गहन विश्लेषण पर आधारित हैं:

- भाई राजीव दीक्षित जी द्वारा भारत भर में दिए गए आधिकारिक ऑडियो-वीडियो व्याख्यान (१९९२ से २०१०)।
- महर्षि वाग्भट रचित मूल ग्रंथ 'अष्टांग हृदयम्' एवं 'अष्टांग संग्रहम्'।
- ब्रिटिश संसद के ऐतिहासिक अभिलेख (House of Commons Archives), मैकाले के शिक्षा संबंधी आधिकारिक पत्र एवं थॉमस मुनरो के सर्वेक्षण।
- आजादी बचाओ आंदोलन और भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के अधिकृत प्रपत्र एवं शोध संदर्भ।



आधिकारिक संपर्क एवं सोशल कम्युनिटी

माध्यम / मंच	विवरण / आधिकारिक लिंक
आधिकारिक वेबसाइट	https://dhavalhirapara.com/
सोशल कम्युनिटी (Instagram / Facebook)	@dhavalhirapara1995

कानूनी चेतावनी एवं अस्वीकरण (Disclaimer)

महत्वपूर्ण वैधानिक अस्वीकरण - चार आयामी विधिक घोषणा

पाठकों, शोधार्थियों एवं अभ्यासकर्ताओं के लिए आवश्यक विधिक स्पष्टीकरण एवं मार्गदर्शिका:

१. स्वास्थ्य एवं आयुर्वेदिक परामर्श अस्वीकरण (Medical Disclaimer)

इस पुस्तक में उल्लिखित स्वास्थ्य, दिनचर्या, ऋतुचर्या और घरेलू उपचार संबंधी विचार महर्षि वाग्भट के 'अष्टांग हृदयम्' तथा भाई राजीव दीक्षित जी के व्याख्यानों पर आधारित शैक्षणिक एवं वैचारिक अध्ययन मात्र हैं। यह पुस्तक किसी योग्य, पंजीकृत चिकित्सक (Registered Medical Practitioner/Ayurvedic Vaidya) के पेशेवर चिकित्सा परामर्श, निदान अथवा उपचार का विकल्प नहीं है। किसी भी गंभीर रोग, गर्भावस्था या पुरानी बीमारी की स्थिति में कोई भी प्रयोग करने से पूर्व अपने निकटतम नाड़ी विशेषज्ञ या योग्य चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें।

२. ऐतिहासिक एवं अभिलेखीय आंकड़ों की स्थिति (Historical & Archival Data)

पुस्तक में ईस्ट इंडिया कंपनी, ब्रिटिश कालीन कर प्रणाली, मैकाले शिक्षा नीति और भारतीय न्याय व्यवस्था से संबंधित जो भी तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं, वे सार्वजनिक अभिलेखों, ऐतिहासिक अध्ययनों और राजीव दीक्षित जी के सार्वजनिक वक्तव्यों से संकलित हैं। इनका उद्देश्य किसी राष्ट्र, संस्था या समुदाय की गरिमा को ठेस पहुंचाना नहीं, बल्कि इतिहास के अनछुए पहलुओं पर वैचारिक विमर्श और बौद्धिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है।

३. आर्थिक एवं नीतिगत विचारों का दायरा (Economic & Policy Perspective)

स्वदेशी अर्थशास्त्र, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के व्यापार मॉडल, विदेशी मुद्रा विनिमय और स्थानीय व्यापार से जुड़े विचार राजीव जी के वैचारिक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करते हैं। पाठक एवं नीति-निर्माता इन विचारों का अध्ययन अपने स्वतंत्र विवेक, शोध और समकालीन आर्थिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में करें। लेखक या प्रकाशक किसी भी व्यक्तिगत आर्थिक निर्णय के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी नहीं होंगे।

४. गोपनीयता एवं बौद्धिक संपदा सुरक्षा (Privacy & Data Protection)

यह पुस्तक पूर्णतः कॉपीराइट-मुक्त एवं सार्वजनिक कल्याण की भावना से तैयार की गई है। पुस्तक में किसी भी व्यक्ति की निजता का उल्लंघन नहीं किया गया है। पुस्तक में किसी भी प्रकार के वास्तविक व्यक्तिगत पहचान पत्र, बैंक खाता, आधार संख्या या संवेदनशील सरकारी डेटा का उल्लेख नहीं है। जहां कहीं प्रक्रियात्मक उदाहरण आवश्यक समझे गए हैं, वहां केवल छद्म अथवा सांकेतिक प्लेसहोल्डर (जैसे [XXXX-XXXX-XXXX]) का ही उपयोग किया गया है।

प्रस्तावना इस पुस्तक के बारे में (About The Book)

इक्कीसवीं सदी के भारत में जब भौतिक विकास और आधुनिकता की अंधी दौड़ में पारंपरिक जीवन-मूल्य पीछे छूट रहे हैं, तब भाई राजीव दीक्षित जी के विचार एक प्रकाशस्तंभ की भांति हमारा मार्गदर्शन करते हैं। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण भारत की आत्मा—गांव, किसान, गोवंश, आयुर्वेद और स्वदेशी व्यवस्था—को पुनर्जीवित करने के लिए समर्पित कर दिया।

यह पुस्तक राजीव जी के जन्म से लेकर उनके अंतिम सफर तक की संपूर्ण जीवन गाथा को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करने के साथ-साथ उनके संपूर्ण वैचारिक दर्शन को सहज, वैज्ञानिक और व्यावहारिक शैली में पाठकों के समक्ष रखती है।

✨ इस पुस्तक से पाठकों को मिलने वाले ६ मुख्य लाभ:

- **पूर्णतः आत्मनिर्भर स्वास्थ्य की कुंजी:** महर्षि वाग्भट के आयुर्वेदिक सूत्रों के माध्यम से बिना किसी महंगी दवा के जीवनभर स्वस्थ रहने के अचूक प्राकृतिक नियम।
- **विदेशी औपनिवेशिक तंत्र का यथार्थ बोध:** मैकाले द्वारा थोपी गई शिक्षा प्रणाली और अंग्रेजों द्वारा बनाए गए दमनकारी कानूनों का तथ्यात्मक विश्लेषण।
- **गौ-आधारित प्राकृतिक कृषि का मॉडल:** रासायनिक खाद और विदेशी बीजों के चक्रव्यूह से मुक्त होकर शून्य-लागत जैविक खेती की व्यावहारिक समझ।
- **स्वदेशी अर्थनीति की वैज्ञानिकता:** स्थानीय संसाधनों, कुटीर उद्योगों और भारतीय मुद्रा की शक्ति को पहचानकर आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करने का मार्ग।
- **युवाओं के लिए राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा:** वैज्ञानिक अनुसंधान के आकर्षक करियर को छोड़कर राष्ट्र-सेवा में संपूर्ण जीवन होम करने वाले एक महामानव का प्रेरणादायी चरित्र।
- **दैनिक जीवन में स्वदेशी अपनाने की स्पष्ट दिशा:** अपने घर, रसोई, खान-पान और जीवनशैली को पूर्णतः प्रदूषण-मुक्त और भारतीय बनाने की सरल कार्ययोजना।

🌿 संकल्प वाक्य

"स्वदेशी केवल वस्तुओं के बहिष्कार का नाम नहीं है, स्वदेशी अपनी आत्मा, अपनी संस्कृति, अपने ज्ञान और अपने स्वाभिमान को पुनः पहचानने की निरंतर साधना है।" — राजीव दीक्षित

अनुक्रमणिका **क्रमबद्ध विषय सूची (Table of Contents)**

प्रस्तुत ग्रंथ को संतुलित और सहज अध्ययन हेतु आठ प्रमुख प्रभागों में विभाजित किया गया है:

अध्याय क्र.	अध्याय का शीर्षक एवं विषय विस्तार	प्रकार / स्वरूप
अध्याय १	प्रारंभिक जीवन, बाल्यकाल, शिक्षा और वैचारिक क्रांति की नींव	जीवनवृत्त (Biography)
अध्याय २	आजादी बचाओ आंदोलन और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विरुद्ध बिगुल	स्वदेशी आंदोलन
अध्याय ३	भारतीय शिक्षा पद्धति बनाम मैकाले तंत्र: गुरुकुलों का स्वर्णिम अतीत	ऐतिहासिक शोध
अध्याय ४	महर्षि वाग्भट का अमर स्वास्थ्य विज्ञान: अष्टांग हृदयम् के सूत्र	स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद
अध्याय ५	गौ-संवर्धन, विषमुक्त प्राकृतिक कृषि और ग्राम-स्वराज्य दर्शन	कृषि एवं स्वावलंबन
अध्याय ६	गुलामी के कानून, प्रशासनिक व्यवस्था और विधिक सुधार की आवश्यकता	कानून एवं संविधान
अध्याय ७	भारत स्वाभिमान यात्रा, अंतिम दिन और अमर वैचारिक विरासत	जीवन संस्मरण
अध्याय ८	प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs), विधिक सुरक्षा एवं संकल्प	प्रश्नोत्तरी एवं निष्कर्ष

अध्याय १

प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और वैज्ञानिक चेतना का उदय

माटी की सुगंध और बाल्यकाल के संस्कार

उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद स्थित नाह गांव में ३० नवंबर १९६७ को पिता राधेश्याम दीक्षित और माता मिथिलेश कुमारी के आंगन में बालक राजीव का जन्म हुआ। ग्रामीण परिवेश के सहज वातावरण, गोपालन और लोक-परंपराओं के मध्य उनका बचपन बीता। उनके माता-पिता ने आरंभ से ही उन्हें सत्यनिष्ठा, परिश्रम और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी। बचपन से ही उनकी स्मरण शक्ति असाधारण थी और वे प्रत्येक घटना के पीछे के तार्किक कारणों को जानने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे।

शिक्षा, वैज्ञानिक प्रतिभा और शोध का पथ

राजीव जी ने अपनी माध्यमिक शिक्षा फिरोजाबाद से पूर्ण की। वे गणित और भौतिकी के अत्यंत मेधावी छात्र थे। विज्ञान के प्रति उनकी गहरी रुचि उन्हें उच्च तकनीकी शिक्षा की ओर ले गई। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संबद्ध संस्थान से बी.टेक की उपाधि प्राप्त की और इसके उपरान्त प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT Kanpur) से स्नातकोत्तर (M.Tech) की उपाधि अर्जित की।

एक शोधार्थी के रूप में उन्होंने दूरसंचार और उपग्रह तकनीक पर उल्लेखनीय कार्य किया। उस कालखंड में उनके सामने विदेशों में जाकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उच्च वेतन और विलासितापूर्ण जीवन जीने के असीम अवसर उपलब्ध थे। किंतु उनके अंतर्मन में कुछ और ही मंथन चल रहा था।

 डॉ. कलाम के साथ संवाद और जीवन की नई दिशा

भारत के तत्कालीन वैज्ञानिक और बाद में राष्ट्रपति बने डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ वैज्ञानिक परियोजनाओं पर संवाद के दौरान राजीव जी ने अनुभव किया कि भारत की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाएं विदेशी कॉर्पोरेशनों की सेवा में खप रही हैं, जबकि देश के गांव, किसान और आम नागरिक बुनियादी सुविधाओं और स्वाभिमान के अभाव में जी रहे हैं।

प्रयोगशाला से जन-आंदोलन की ओर प्रस्थान

राजीव जी ने अनुभव किया कि भारत को औपचारिक रूप से १५ अगस्त १९४७ को जो राजनीतिक स्वतंत्रता मिली थी, वह अधूरी थी। देश की प्रशासनिक मशीनरी, न्यायपालिका, शिक्षा और आर्थिक तंत्र अब भी औपनिवेशिक काल के ढांचे पर ही संचालित हो रहे थे। एक वैज्ञानिक की तार्किक दृष्टि और राष्ट्रभक्त के संवेदनशील हृदय के साथ उन्होंने सुखद व्यक्तिगत करियर का परित्याग कर अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र-चिंतन और जन-जागरण को समर्पित करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया।

अध्याय २ आजादी बचाओ आंदोलन और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विरुद्ध बिगुल

आजादी बचाओ आंदोलन का उदय (१९९२)

१९९१ में जब भारत सरकार ने नई आर्थिक नीति के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) के दरवाजे खोले, तब बहुराष्ट्रीय कंपनियों की अंधी बाढ़ भारत की ओर बढ़ने लगी। इतिहासकार और अर्थशास्त्री जिस समय इसे विकास की नई सुबह बता रहे थे, उसी समय राजीव दीक्षित जी ने चेतावनी दी कि यह 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के नए आर्थिक अवतार का प्रवेश है।

१९९२ में प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक प्रो. बनवारी लाल शर्मा, न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह और अन्य प्रबुद्ध राष्ट्रभक्तों के साथ मिलकर उन्होंने 'आजादी बचाओ आंदोलन' की स्थापना की। राजीव जी इसके राष्ट्रीय प्रवक्ता बने और देश के कोने-कोने में घूमकर लोगों को आर्थिक गुलामी के खतरों से आगाह करना आरंभ किया।

ड्यूपॉन्ट (DuPont) और कारगिल (Cargill) जैसी विशालकाय कंपनियों से संघर्ष

राजीव जी ने केवल भाषण नहीं दिए, बल्कि वैज्ञानिक और कानूनी तथ्यों के आधार पर विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के घातक मंसूबों को बेनकाब किया:

- **ड्यूपॉन्ट नायलॉन परियोजना (गोवा):** गोवा के पर्यावरण को तबाह करने वाले अमेरिकी कंपनी ड्यूपॉन्ट के कारखाने के विरुद्ध स्थानीय जनता को संगठित किया और अंततः कंपनी को परियोजना बंद करने पर विवश किया।
- **कारगिल नमक सत्याग्रह:** विदेशी कंपनियों द्वारा भारतीय नमक उद्योग पर एकाधिकार जमाने और किसानों को पंगु बनाने के प्रयासों के खिलाफ व्यापक पदयात्राएं कीं।
- **पेप्सी और कोका-कोला के रासायनिक सच का पर्दाफाश:** शीतल पेयों में पाए जाने वाले अत्यधिक कीटनाशकों (Pesticides), फॉस्फोरिक एसिड और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रसायनों की प्रयोगशाला रिपोर्ट जनता के सामने रखी।

💰 स्वदेशी का मूल अर्थशास्त्र

"जब आप एक रुपये का विदेशी साबुन या टूथपेस्ट खरीदते हैं, तो उस रुपये का एक बड़ा हिस्सा रॉयल्टी और मुनाफे के रूप में विदेशों में चला जाता है। किंतु जब आप अपने स्थानीय कुम्हार, बढ़ई, तेली या कारीगर से वस्तु खरीदते हैं, तो वह धन आपके अपने समाज में घूमकर देश की समृद्धि बढ़ाता है।" — राजीव दीक्षित

प्राचीन भारतीय गुरुकुल परंपरा का स्वर्णिम काल

राजीव दीक्षित जी ने ब्रिटिश संसद के अभिलेखों और ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा किए गए सर्वेक्षणों के आधार पर यह सिद्ध किया कि १८वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक भारत में एक अत्यंत समृद्ध और वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली कार्यरत थी।

१८१३ से १८३० के मध्य मद्रास प्रेसीडेंसी के तत्कालीन गवर्नर थॉमस मुनरो, बंगाल के विलियम एडम और जी. डब्ल्यू. लिटनर द्वारा पंजाब में किए गए आधिकारिक सर्वेक्षणों के अनुसार, भारत के प्रत्येक गांव में कम से कम एक गुरुकुल अवश्य था। वहां साक्षरता दर अत्यंत उच्च थी और समाज के सभी वर्गों के विद्यार्थी गणित, नक्षत्र विज्ञान, धातु विज्ञान, स्थापत्य, दर्शन और आयुर्वेद की उच्च शिक्षा प्राप्त करते थे।

लॉर्ड मैकाले का कुख्यात षड्यंत्र (१८३५)

लॉर्ड थॉमस बैबिंगटन मैकाले ने २ फरवरी १८३५ को ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत अपने विवरण में स्पष्ट रूप से लिखा था कि यदि भारत पर लंबे समय तक शासन करना है, तो उसकी सांस्कृतिक रीढ़—उसकी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली—को तोड़ना अनिवार्य होगा। इसके परिणामस्वरूप १८३५ में 'इंग्लिश एजुकेशन एक्ट' पारित किया गया।

मैकालेवादी शिक्षा का उद्देश्य

मैकाले का घोषित उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो "रंग और रक्त से तो भारतीय हो, परंतु अपनी रुचि, विचारों, नैतिकता और बुद्धि से अंग्रेज हो।" यह प्रणाली स्वतंत्र विचारक नहीं, बल्कि औपनिवेशिक तंत्र के आज्ञाकारी क्लर्क तैयार करने के लिए रची गई थी।

गुरुकुल बनाम मैकाले शिक्षा: तुलनात्मक तालिका

मापदंड	प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा	मैकाले की औपनिवेशिक शिक्षा
मूल उद्देश्य	चरित्र निर्माण, आत्मज्ञान और व्यावहारिक कौशल	आज्ञाकारी कर्मचारी और क्लर्क तैयार करना
शिक्षा का माध्यम	मातृभाषा और संस्कृत (सहज संप्रेषण)	विदेशी अंग्रेजी भाषा (रटने की प्रवृत्ति)
कौशल एवं आजीविका	हस्तकला, कृषि, व्यापार और आत्मनिर्भरता	केवल डिग्री और नौकरियों पर निर्भरता
सामाजिक दृष्टि	'वसुधैव कुटुम्बकम्' और प्रकृति-सम्मान	अंधानुकरण, उपभोक्तावाद और हीनभावना

अध्याय ४

महर्षि वाग्भट का अमर स्वास्थ्य विज्ञान

अष्टांग हृदयम् और महर्षि वाग्भट का दर्शन

राजीव दीक्षित जी ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में आयुर्वेद के महान ग्रंथ 'अष्टांग हृदयम्' और 'अष्टांग संग्रहम्' पर गहन शोध किया। उन्होंने चरक और सुश्रुत के शिष्य महर्षि वाग्भट के लगभग ३००० वर्ष पुराने सूत्रों को आधुनिक संदर्भ में बेहद सरल भाषा में जन-जन तक पहुंचाया। उनका दृढ़ विश्वास था कि व्यक्ति अपने शरीर का स्वयं सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक बन सकता है।

वात, पित्त और कफ: त्रिदोष संतुलन का सिद्धांत

महर्षि वाग्भट के अनुसार मानव शरीर में होने वाले ८५% से अधिक रोग वात, पित्त और कफ के असंतुलन से उत्पन्न होते हैं। यदि व्यक्ति अपने खान-पान और दिनचर्या को प्रकृति के अनुकूल रखे, तो वह बिना किसी एलोपैथिक औषधि के १०० वर्ष तक निरोगी रह सकता है।

 दैनिक स्वास्थ्य के चार अमर सूत्र (Golden Rules)

- भोजनान्ते विषं वारि:** भोजन के तुरंत बाद पानी पीना विष पीने के समान है। भोजन के उपरांत पेट में जठराग्नि प्रदीप्त होती है, जो भोजन को पचाती है। तुरंत पानी पीने से यह अग्नि मंद पड़ जाती है और भोजन पचने के बजाय सड़ने लगता है। भोजन के कम से कम ४८ मिनट से १ घंटा बाद ही पानी पिएं।
- घूंट-घूंट करके पानी पीना:** पानी को हमेशा चाय की भांति घूंट-घूंट भरकर बैठ कर ही पीना चाहिए, जिससे मुंह की क्षारीय लार (Saliva) पेट के अम्लीय वातावरण में जाकर उसे संतुलित कर सके।
- ठंडा या फ्रिज का पानी कभी न पिएं:** फ्रिज का अत्यधिक ठंडा पानी पीने से आंते सिकुड़ जाती हैं और शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए रक्त का प्रवाह पेट की ओर केंद्रित हो जाता है, जिससे हृदय और मस्तिष्क पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है।
- उषापान (सुबह का पहला जल):** सुबह सोकर उठते ही बिना कुल्ला किए मुंह की अनमोल लार सहित २ से ३ गिलास गुनगुना पानी घूंट-घूंट करके पीना चाहिए।

रसोईघर की औषधियां और एल्युमिनियम का त्याग

राजीव जी ने बताया कि हमारी पारंपरिक भारतीय रसोई वास्तव में पहला औषधालय है। मेथी, हल्दी, दालचीनी, जीरा, सौंठ और अजवाइन अद्भुत औषधियां हैं। इसके साथ ही उन्होंने भोजन पकाने के लिए **मिट्टी, पीतल और कांसे** के बर्तनों के उपयोग पर बल दिया तथा अंग्रेजों द्वारा जेलों में कैदियों को मंद विष देने के लिए लाए गए **एल्युमिनियम के बर्तनों और प्रेशर कुकर** के अत्यधिक प्रयोग को त्यागने का आह्वान किया।

देसी गोवंश: भारतीय अर्थव्यवस्था और कृषि की रीढ़

राजीव दीक्षित जी के चिंतन का केंद्र बिंदु केवल अध्यात्म नहीं, बल्कि विशुद्ध ग्रामीण अर्थशास्त्र था। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारतीय देसी गाय (Bos Indicus) केवल एक पूजनीय पशु नहीं, बल्कि भारतीय कृषि, जनस्वास्थ्य और ऊर्जा तंत्र का वैज्ञानिक आधार है।

देसी गाय के कूबड़ में 'सूर्यकेतु नाड़ी' होती है, जो सूर्य के प्रकाश से मिलकर स्वर्ण भस्म और गुणकारी तत्वों का संचार करती है। देसी गाय का दूध (A2 मिल्क), गोबर और गोमूत्र प्रकृति के अनुपम उपहार हैं।

हरित क्रांति का अंधेरा और रासायनिक खेती का संकट

१९६० के दशक में थोपी गई तथाकथित हरित क्रांति ने भारतीय कृषि को विदेशी यूरिया, डीएपी और जहरीले कीटनाशकों (Pesticides) का गुलाम बना दिया। इसके दुष्परिणाम आज हमारे सामने हैं:

- धरती माता की स्वाभाविक उर्वरा शक्ति और सूक्ष्म जीवाणुओं का विनाश।
- भूजल स्तर का तेजी से गिरना और अत्यधिक पानी की बर्बादी।
- कैसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और किडनी फेलियर जैसी जानलेवा बीमारियों का प्रकोप।
- लागत में भारी वृद्धि के कारण किसानों का कर्ज के दुष्चक्र में फंसना।

जीवामृत एवं घनजीवामृत: शून्य-लागत प्राकृतिक खेती

राजीव जी ने देसी गाय के एक ग्राम गोबर में करोड़ों लाभकारी मित्र जीवाणुओं की उपस्थिति का वैज्ञानिक प्रमाण दिया। उन्होंने बताया कि मात्र एक देसी गाय के गोबर और गोमूत्र से ३० एकड़ कृषि भूमि पर बिना एक पैसा रासायनिक खाद पर खर्च किए भरपूर पैदावार ली जा सकती है।

ग्राम-स्वराज्य: महात्मा गांधी से राजीव दीक्षित तक

राजीव जी का स्पष्ट मानना था कि भारत की समृद्धि का मार्ग दिल्ली या मुंबई की गगनचुंबी इमारतों से नहीं, बल्कि भारत के ७ लाख गांवों के स्वावलंबन से होकर गुजरता है। जब तक गांव अपने भोजन, वस्त्र, ऊर्जा और न्याय के लिए आत्मनिर्भर नहीं होंगे, तब तक सच्चा स्वराज्य असंभव है।

औपनिवेशिक कानून और प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार

गुलामी के कानूनों की निरंतरता

राजीव दीक्षित जी ने भारतीय लोकतंत्र के उस दुखद पक्ष को उजागर किया जिस पर प्रायः बुद्धिजीवी मौन साध लेते हैं। उन्होंने बताया कि १५ अगस्त १९४७ के सत्ता हस्तांतरण के बाद भी अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के दमन के लिए बनाए गए सैकड़ों कानून जस के तस लागू रहे।

प्रमुख औपनिवेशिक कानून और उनका चरित्र

कानून का नाम	निर्माण वर्ष	ब्रिटिश शासन का मूल उद्देश्य
पुलिस एक्ट (Indian Police Act)	१८६१	१८५७ के गदर के बाद जनता को डराना, दबाना और शासकों की रक्षा करना।
भारतीय दंड संहिता (IPC)	१८६०	क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों को विधिक रूप से प्रताड़ित करना।
भूमि अधिग्रहण अधिनियम (Land Acquisition Act)	१८९४	किसानों की उपजाऊ भूमि को सरकार द्वारा जबरन कौड़ियों के भाव छीनना।
वन संरक्षण कानून (Indian Forest Act)	१९२७	वनवासियों और आदिवासियों को उनके पारंपरिक वन-अधिकारों से वंचित करना।

विधिक एवं संवैधानिक सुधारों की रूपरेखा

राजीव जी की मांग थी कि भारत में कानून जनता की सेवा और न्याय की सुलभता के लिए होने चाहिए, न कि नागरिक को भयभीत करने के लिए। उन्होंने न्याय प्रणाली को अत्यंत तीव्र, सस्ती और स्थानीय भारतीय भाषाओं में संचालित करने का प्रारूप प्रस्तुत किया।

भारत स्वाभिमान आंदोलन की स्थापना (२००९)

वर्ष २००९ में भाई राजीव दीक्षित जी ने देश भर के लाखों राष्ट्रभक्त युवाओं को संगठित कर 'भारत स्वाभिमान ट्रस्ट' की राष्ट्रीय स्तर पर नींव रखी। वे इसके राष्ट्रीय सचिव बने। उनका लक्ष्य था: देश से भ्रष्टाचार का समूल नाश, विदेशों में जमा काले धन की वापसी, व्यवस्था परिवर्तन और भारत को पुनः विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना।

अंतिम यात्रा और छत्तीसगढ़ का प्रवास

नवंबर २०१० में राजीव जी छत्तीसगढ़ के सघन प्रवास पर थे। वे दिन-रात बिना विश्राम किए लगातार सभाएं कर रहे थे और जनता को जागरूक बना रहे थे। ३० नवंबर २०१० को भिलाई में उनका स्वास्थ्य अचानक बिगड़ा और मात्र ४३ वर्ष की अल्पायु में इस महान राष्ट्र चिंतक की सांसें थम गईं।

उनका इस प्रकार अचानक जाना करोड़ों देशवासियों के लिए एक असहनीय आघात था। उनके आकस्मिक अवसान के कारणों को लेकर आज भी उनके लाखों समर्थकों के मन में अनेक प्रश्न और रहस्य विद्यमान हैं।

✨ अमर वैचारिक विरासत (The Eternal Legacy)

भाई राजीव दीक्षित जी भले ही भौतिक रूप से आज हमारे मध्य उपस्थित नहीं हैं, किंतु डिजिटल युग में उनके हजारों व्याख्यानो ने देश के करोड़ों युवाओं के भीतर एक नई चेतना का संचार किया है। आज देश में चल रहा प्राकृतिक कृषि का आंदोलन, स्वदेशी उत्पादों की मांग और आयुर्वेद के प्रति बढ़ता विश्वास राजीव जी के अथक परिश्रम का ही सुफल है।

अध्याय ८ प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न (Frequently Asked Questions)

प्रश्न १: क्या राजीव दीक्षित जी किसी राजनीतिक दल से जुड़े हुए थे?

उत्तर: नहीं, राजीव दीक्षित जी किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य नहीं थे। वे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर व्यवस्था परिवर्तन और राष्ट्रहित के लिए कार्य करने वाले स्वतंत्र चिंतक थे।

प्रश्न २: महर्षि वाग्भट के अनुसार पानी पीने का सबसे सही तरीका क्या है?

उत्तर: पानी हमेशा बैठकर, घूंट-घूंट (SIP by SIP) करके पीना चाहिए और भोजन करने के कम से कम ४८ मिनट से १ घंटे बाद ही पीना चाहिए।

प्रश्न ३: राजीव जी ने एल्युमिनियम के बर्तनों का विरोध क्यों किया?

उत्तर: एल्युमिनियम एक धीमी गति का विषैला तत्व (Slow Poison) है। इसमें बना भोजन शरीर में कई प्रकार के असाध्य रोगों और जोड़ों के दर्द को जन्म देता है। अंग्रेजों ने इसे भारतीय कैदियों के स्वास्थ्य को क्षीण करने के लिए प्रारंभ किया था।

प्रश्न ४: क्या आधुनिक जीवन में १००% स्वदेशी अपनाना संभव है?

उत्तर: हां, इसकी शुरुआत अपनी रसोई, दैनिक उपयोग की वस्तुओं (दंतमंजन, साबुन, तेल) और स्थानीय किसानों से सीधे अनाज-सब्जी खरीदकर चरणबद्ध तरीके से की जा सकती है।

प्रश्न ५: प्राकृतिक खेती और रासायनिक खेती में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर: रासायनिक खेती में बाहर से महंगे रसायन और जहर खरीदे जाते हैं, जबकि प्राकृतिक खेती में देसी गाय के गोबर-गोमूत्र और स्थानीय संसाधनों से शून्य लागत में भूमि को उर्वरा बनाया जाता है।

प्रश्न ६: राजीव जी के अनुसार भारत का सोना और संपदा विदेश कैसे गई?

उत्तर: ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश राज ने अनैतिक कर प्रणाली, कच्चे माल की लूट और औपनिवेशिक व्यापार नीतियों के माध्यम से भारत की अथाह संपदा को ब्रिटेन भेजा।

प्रश्नोत्तरी

प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न (भाग - २)

प्रश्न ७: क्या राजीव दीक्षित जी के व्याख्यान आज भी प्रामाणिक हैं?

उत्तर: उनके अधिकांश व्याख्यान ऐतिहासिक अभिलेखों (ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स के दस्तावेज) और मूल संहिताओं (चरक, सुश्रुत, वाग्भट) के संदर्भों पर आधारित हैं।

प्रश्न ८: क्या इस पुस्तक में दी गई औषधियां सीधे उपयोग की जा सकती हैं?

उत्तर: सामान्य दैनिक स्वास्थ्य नियम (जैसे पानी पीने के नियम) सभी के लिए सुरक्षित हैं, किंतु किसी जटिल या गंभीर बीमारी के उपचार हेतु योग्य आयुर्वेदिक वैद्य का परामर्श अनिवार्य है।

प्रश्न ९: युवाओं के लिए राजीव दीक्षित जी का मुख्य संदेश क्या था?

उत्तर: अपनी मातृभाषा पर गर्व करें, विदेशी मानसिक गुलामी से मुक्त हों, स्वास्थ्य के प्रति सजग बनें और अपने ज्ञान व कौशल का उपयोग राष्ट्र के उत्थान में करें।

प्रश्न १०: क्या इस पुस्तक का वितरण व्यावसायिक लाभ हेतु किया जा सकता है?

उत्तर: नहीं, यह ग्रंथ पूर्णतः जनहित, शैक्षणिक अध्ययन एवं राष्ट्र-जागृति हेतु समर्पित है। इसे निःशुल्क साझा किया जाना चाहिए।

प्रश्न ११: राजीव जी के स्वदेशी आंदोलन से एक सामान्य नागरिक कैसे जुड़ सकता है?

उत्तर: दैनिक जीवन में भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता देकर, अपनी भाषा और संस्कृति का सम्मान करके तथा गो-संवर्धन व प्राकृतिक कृषि को समर्थन देकर।

प्रश्न १२: क्या राजीव दीक्षित जी के व्याख्यानो का ऑडियो-वीडियो संग्रह उपलब्ध है?

उत्तर: हां, इंटरनेट एवं विभिन्न स्वदेशी ट्रस्टों के माध्यम से उनके लगभग सभी सार्वजनिक व्याख्यान जनहित में निःशुल्क उपलब्ध हैं।

संकल्प

अंतिम पृष्ठ एवं जन-जागृति आह्वान (Final CTA)

प्रिय पाठक, राजीव दीक्षित जी के जीवन और विचारों पर आधारित इस ग्रंथ को पढ़ने के लिए आपका हार्दिक आभार। यह पुस्तक केवल पन्नों पर छपे अक्षरों का संकलन नहीं है, बल्कि एक ऐसा वैचारिक बीज है जिसे यदि आप अपने जीवन में स्थान देंगे, तो आपका परिवार स्वस्थ बनेगा और राष्ट्र समर्थ होगा।

🌱 आत्मनिर्भरता एवं स्वास्थ्य का छोटा संकल्प

- आज से ही अपने घर में ठंडा फ्रिज का पानी पीना बंद करें और मिट्टी के घड़े का जल अपनाएं।
- भोजन के तुरंत बाद पानी पीने की आदत को त्यागें।
- कम से कम तीन विदेशी ब्रांड की वस्तुओं के स्थान पर स्थानीय स्वदेशी विकल्प चुनें।
- अपने निकटतम किसी जैविक किसान या गोशाला से जुड़कर देसी गोवंश का संवर्धन करें।

📢 पुस्तक ई-बुक डाउनलोड एवं जन-साझाकरण लिंक

इस संपूर्ण पुस्तक की ई-बुक (PDF) निःशुल्क डाउनलोड करने तथा भाई राजीव दीक्षित जी के जीवन दर्शन के निरंतर अध्ययन हेतु आधिकारिक वेब पोर्टल पर पधारें:

🌐 <https://dhavalhirapara.com/ebook>

विनम्र निवेदन: यदि आपको यह पुस्तक राष्ट्रहित में उपयोगी लगी हो, तो कृपया इसे अपने परिजनों, मित्रों, अध्ययन समूहों और सोशल मीडिया पर अवश्य साझा (Share) करें। एक प्रबुद्ध और स्वावलंबी नागरिक ही समर्थ भारत का आधार है!

वंदे मातरम् | भारत माता की जय